

Amit

ॐ गं गणपतये नमः

शुभ



लाभ



जन्मपत्रिका

Amit

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)

+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं हैं।

Amit

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: **01/01/2000**
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: **09:56:00** घंटे
इष्ट _____: 06:50:24 घटी
स्थान _____: **Mumbai**
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 18:58:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:17:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:12 घंटे
साम्पातिक काल _____: 15:57:56 घंटे
सूर्योदय _____: 07:11:50 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:12:07 घंटे
दिनमान _____: 11:00:17 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 16:11:40 धनु
लग्न के अंश _____: 28:18:11 मकर

अवकहड़ा चक्र
लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर – शनि
राशि-स्वामी _____: तुला – शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: स्वाति – 3
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: सुकर्मा
करण _____: विष्टि
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: रो-रोहित
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

Amit

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि / प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1921	पौष	11
पंजाबी	संवत : 2056	पौष	17
बंगाली	सन् : 1406	पौष	16
तमिल	संवत : 2056	मार्गड़ी	17
केरल	कोल्लम : 1175	धनु	17
नेपाली	संवत : 2056	पौष	17
चैत्रादि	संवत : 2056	पौष	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2056	मार्गशीर्ष	कृष्ण 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 10
तिथि समाप्ति काल _____: 11:03:58
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: स्वाति
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 18:33:26 घंटे
जन्म योग _____: स्वाति
सूर्योदय कालीन योग _____: सुकर्मा
योग समाप्ति काल _____: 12:37:23 घंटे
जन्म योग _____: सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण _____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 11:03:58 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 44:30:56
भभोग _____: 66:04:29
भोग्य दशा काल _____: राहु 5 वर्ष 10 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____: माघ
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: शतभिषा
योग _____: शुक्ल
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: कन्या
सूर्य _____: कन्या
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: तुला
बुध _____: कर्क
गुरु _____: वृश्चिक
शुक्र _____: धनु
शनि _____: सिंह
राहु _____: मकर

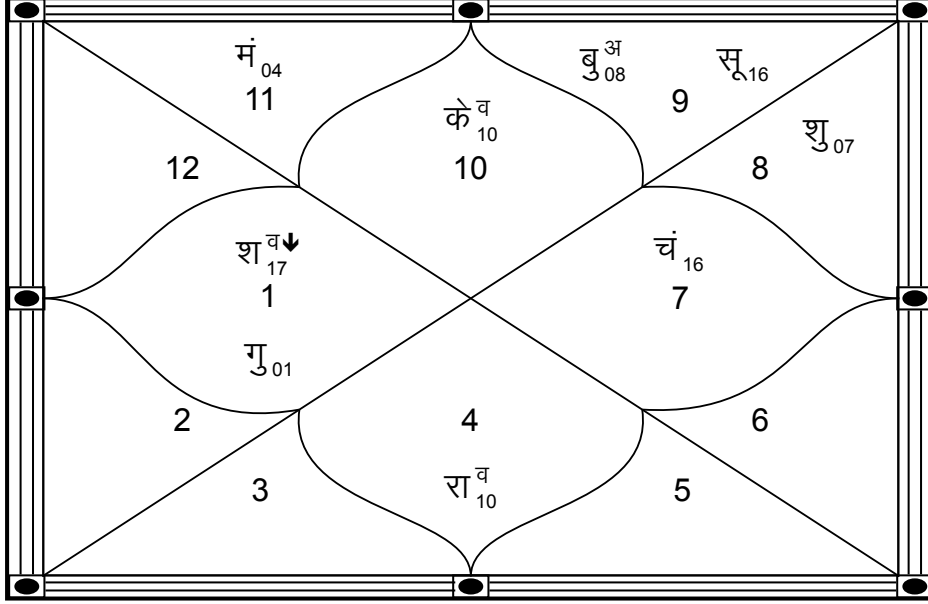
Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

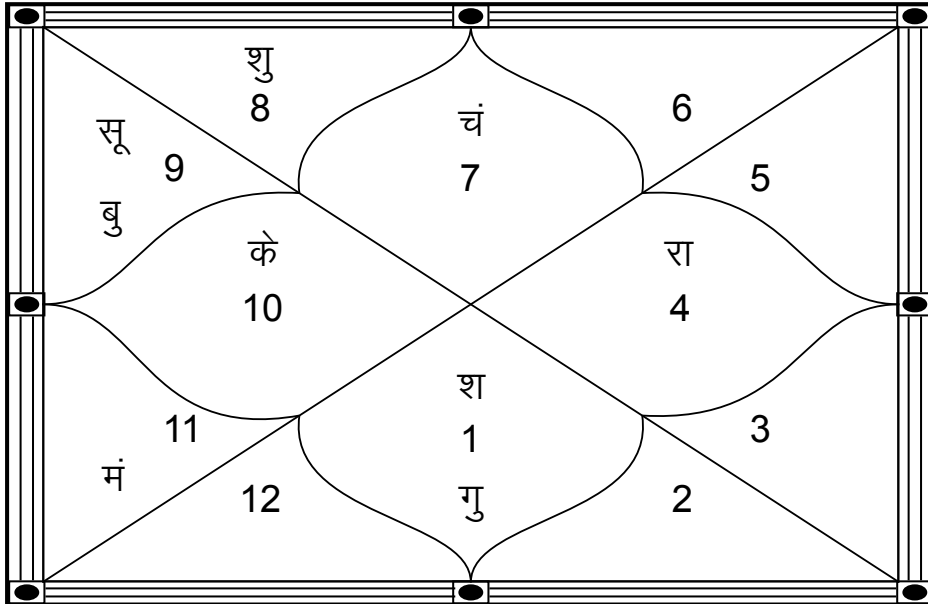
Amit

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	श ^व ₁₇ गु ₀₁		
मं ₀₄			रा ^व ₁₀
के ^व ₁₀ ल ₂₈			
बु ^अ ₀₈ सू ₁₆	शु ₀₇	चं ₁₆	

लग्न कुण्डली

	श ^व _{17 गु₀₁}		
		मं ₀₄	
रा ^व ₁₀		के ^व ₁₀ ल ₂₈	
	चं ₁₆	शु ₀₇	सू ₁₆ बु ^अ ₀₈

विंशोत्तरी
राहु 5वर्ष 10मा 3दि

राहु

01/01/2000

05/11/2107

राहु	04/11/2005
गुरु	04/11/2021
शनि	03/11/2040
बुध	04/11/2057
केतु	03/11/2064
शुक्र	03/11/2084
सूर्य	04/11/2090
चन्द्र	04/11/2100
मंगल	05/11/2107

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 7मा 24दि

सिद्धा

25/08/2018

25/08/2025

सिद्धा	05/01/2020
संकटा	26/07/2021
मंगला	05/10/2021
पिंगला	24/02/2022
धान्या	25/09/2022
भ्रामरी	06/07/2023
भद्रिका	25/06/2024
उल्का	25/08/2025

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	28:18:11	421:43:38	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	---
सूर्य			धनु	16:11:40	01:01:10	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			तुला	15:40:23	12:04:15	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	सम राशि
मंगल			कुंभ	03:51:56	00:46:32	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	सम राशि
बुध		अ	धनु	07:32:45	01:33:17	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	सम राशि
गुरु			मेष	01:23:14	00:02:23	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			वृश्चि	07:19:53	01:12:31	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	सम राशि
शनि	व		मेष	16:32:56	00:01:14	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	नीच राशि
राहु	व		कर्क	10:06:59	00:03:04	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		मक	10:06:59	00:03:04	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	20:56:25	00:03:01	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	---
नेप			मक	09:19:43	00:02:08	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो			वृश्चि	17:35:26	00:02:07	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
दशम भाव			वृश्चि	07:44:28	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	केतु	--

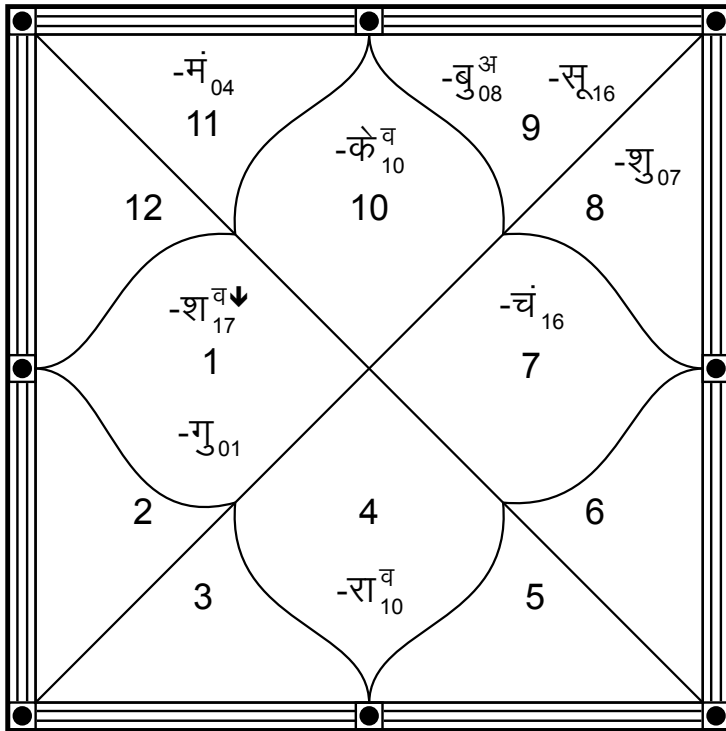
व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

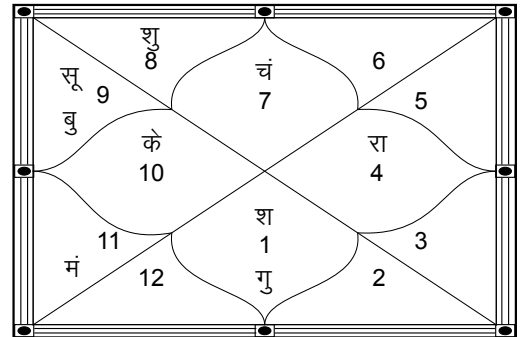
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:51:11

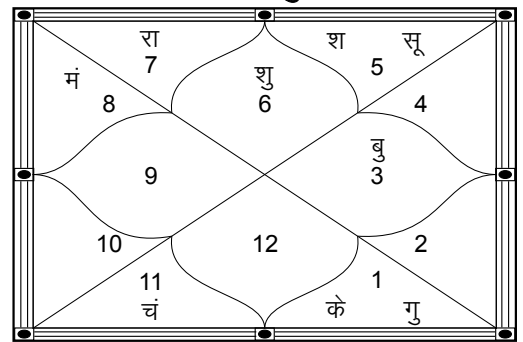
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)

+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003

[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 14:52:34	मकर 28:18:11
2	कुम्भ 14:52:34	मीन 01:26:56
3	मीन 18:01:19	मेष 04:35:42
4	मेष 21:10:05	वृष 07:44:28
5	वृष 21:10:05	मिथुन 04:35:42
6	मिथुन 18:01:19	कर्क 01:26:56
7	कर्क 14:52:34	कर्क 28:18:11
8	सिंह 14:52:34	कन्या 01:26:56
9	कन्या 18:01:19	तुला 04:35:42
10	तुला 21:10:05	वृश्चिक 07:44:28
11	वृश्चिक 21:10:05	धनु 04:35:42
12	धनु 18:01:19	मकर 01:26:56

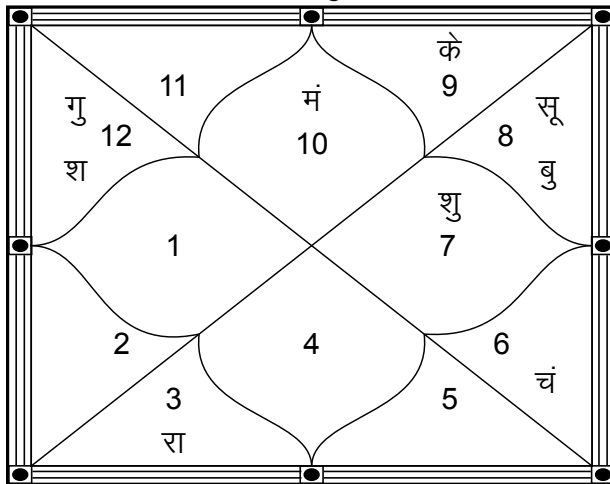
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	28:18:11
2	मीन	05:31:08
3	मेष	09:18:46
4	वृष	07:44:28
5	मिथुन	03:03:18
6	मिथुन	28:37:37
7	कर्क	28:18:11
8	कन्या	05:31:08
9	तुला	09:18:46
10	वृश्चिक	07:44:28
11	धनु	03:03:18
12	धनु	28:37:37

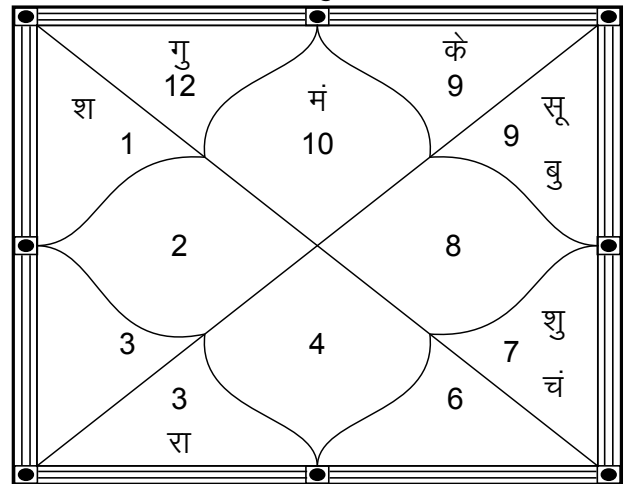
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)

+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003

[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

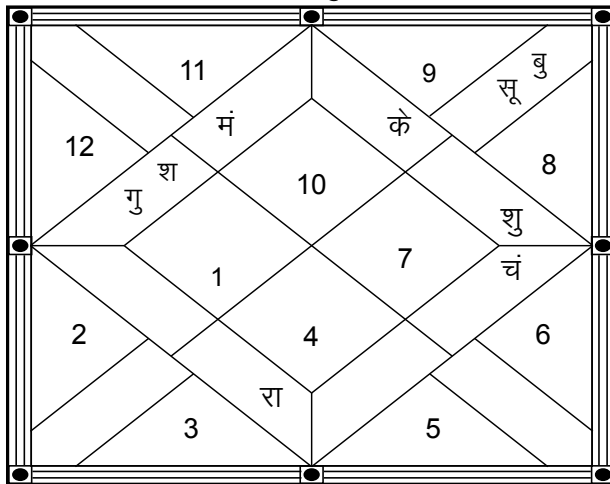
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	कारक		अवस्था				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	अमात्य	पितृ	युवा	मुदित	कौतुक	3.68	28 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	निपीदित	शयन	1.04	28 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	बाल	शान्त	शयन	5.80	61 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	सभा	0.00	67 %
गुरु	कलत्र	धन	बाल	मुदित	निद्रा	4.48	49 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	वृद्ध	निपीदित	शयन	2.15	12 %
शनि	आत्मा	आयु	युवा	भीत	गमन	0.10	20 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	खल	कौतुक	0.00	35 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	सभा	0.00	0 %
कुल						17.25	

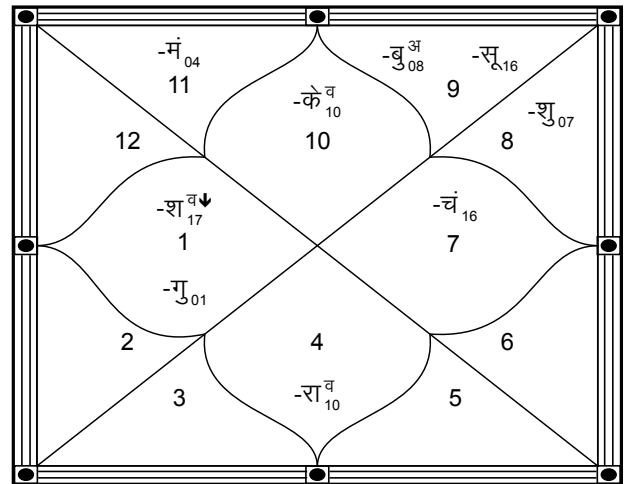
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[\[www.devpoojanam.com\]](http://www.devpoojanam.com) [\[devpoojanam@gmail.com\]](mailto:devpoojanam@gmail.com)

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 5 वर्ष 10 मास 3 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
01/01/2000	04/11/2005	04/11/2021	03/11/2040	04/11/2057
04/11/2005	04/11/2021	03/11/2040	04/11/2057	03/11/2064
00/00/0000	गुरु 23/12/2007	शनि 06/11/2024	बुध 02/04/2043	केतु 02/04/2058
00/00/0000	शनि 05/07/2010	बुध 17/07/2027	केतु 29/03/2044	शुक्र 02/06/2059
00/00/0000	बुध 10/10/2012	केतु 25/08/2028	शुक्र 28/01/2047	सूर्य 08/10/2059
00/00/0000	केतु 16/09/2013	शुक्र 26/10/2031	सूर्य 04/12/2047	चंद्र 08/05/2060
01/01/2000	शुक्र 17/05/2016	सूर्य 07/10/2032	चंद्र 05/05/2049	मंगल 04/10/2060
शुक्र 23/05/2002	सूर्य 05/03/2017	चंद्र 08/05/2034	मंगल 02/05/2050	राहु 22/10/2061
सूर्य 17/04/2003	चंद्र 05/07/2018	मंगल 17/06/2035	राहु 19/11/2052	गुरु 28/09/2062
चंद्र 16/10/2004	मंगल 11/06/2019	राहु 23/04/2038	गुरु 24/02/2055	शनि 07/11/2063
मंगल 04/11/2005	राहु 04/11/2021	गुरु 03/11/2040	शनि 04/11/2057	बुध 03/11/2064

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
03/11/2064	03/11/2084	04/11/2090	04/11/2100	05/11/2107
03/11/2084	04/11/2090	04/11/2100	05/11/2107	00/00/0000
शुक्र 05/03/2068	सूर्य 21/02/2085	चंद्र 04/09/2091	मंगल 02/04/2101	राहु 18/07/2110
सूर्य 05/03/2069	चंद्र 22/08/2085	मंगल 04/04/2092	राहु 21/04/2102	गुरु 11/12/2112
चंद्र 04/11/2070	मंगल 28/12/2085	राहु 04/10/2093	गुरु 28/03/2103	शनि 18/10/2115
मंगल 04/01/2072	राहु 22/11/2086	गुरु 03/02/2095	शनि 06/05/2104	बुध 06/05/2118
राहु 04/01/2075	गुरु 10/09/2087	शनि 03/09/2096	बुध 03/05/2105	केतु 25/05/2119
गुरु 04/09/2077	शनि 22/08/2088	बुध 03/02/2098	केतु 29/09/2105	शुक्र 02/01/2120
शनि 03/11/2080	बुध 29/06/2089	केतु 04/09/2098	शुक्र 29/11/2106	00/00/0000
बुध 04/09/2083	केतु 04/11/2089	शुक्र 06/05/2100	सूर्य 06/04/2107	00/00/0000
केतु 03/11/2084	शुक्र 04/11/2090	सूर्य 04/11/2100	चंद्र 05/11/2107	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 5 वर्ष 10 मा 14 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[\[www.devpoojanam.com\]](http://www.devpoojanam.com) [devpoojanam@gmail.com]

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
04/11/2021		06/11/2024		17/07/2027		25/08/2028		26/10/2031	
06/11/2024		17/07/2027		25/08/2028		26/10/2031		07/10/2032	
शनि	27/04/2022	बुध	26/03/2025	केतु	10/08/2027	शुक्र	06/03/2029	सूर्य	12/11/2031
बुध	29/09/2022	केतु	22/05/2025	शुक्र	17/10/2027	सूर्य	03/05/2029	चंद्र	11/12/2031
केतु	02/12/2022	शुक्र	02/11/2025	सूर्य	06/11/2027	चंद्र	07/08/2029	मंगल	31/12/2031
शुक्र	03/06/2023	सूर्य	21/12/2025	चंद्र	10/12/2027	मंगल	14/10/2029	राहु	21/02/2032
सूर्य	28/07/2023	चंद्र	13/03/2026	मंगल	02/01/2028	राहु	05/04/2030	गुरु	08/04/2032
चंद्र	28/10/2023	मंगल	09/05/2026	राहु	03/03/2028	गुरु	06/09/2030	शनि	02/06/2032
मंगल	31/12/2023	राहु	04/10/2026	गुरु	26/04/2028	शनि	09/03/2031	बुध	21/07/2032
राहु	13/06/2024	गुरु	12/02/2027	शनि	29/06/2028	बुध	19/08/2031	केतु	10/08/2032
गुरु	06/11/2024	शनि	17/07/2027	बुध	25/08/2028	केतु	26/10/2031	शुक्र	07/10/2032
शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
07/10/2032		08/05/2034		17/06/2035		23/04/2038		03/11/2040	
08/05/2034		17/06/2035		23/04/2038		03/11/2040		02/04/2043	
चंद्र	24/11/2032	मंगल	01/06/2034	राहु	20/11/2035	गुरु	24/08/2038	बुध	08/03/2041
मंगल	28/12/2032	राहु	01/08/2034	गुरु	07/04/2036	शनि	18/01/2039	केतु	28/04/2041
राहु	25/03/2033	गुरु	24/09/2034	शनि	19/09/2036	बुध	29/05/2039	शुक्र	22/09/2041
गुरु	10/06/2033	शनि	27/11/2034	बुध	13/02/2037	केतु	22/07/2039	सूर्य	05/11/2041
शनि	09/09/2033	बुध	23/01/2035	केतु	15/04/2037	शुक्र	23/12/2039	चंद्र	17/01/2042
बुध	30/11/2033	केतु	16/02/2035	शुक्र	05/10/2037	सूर्य	07/02/2040	मंगल	09/03/2042
केतु	03/01/2034	शुक्र	24/04/2035	सूर्य	27/11/2037	चंद्र	25/04/2040	राहु	19/07/2042
शुक्र	09/04/2034	सूर्य	14/05/2035	चंद्र	21/02/2038	मंगल	17/06/2040	गुरु	14/11/2042
सूर्य	08/05/2034	चंद्र	17/06/2035	मंगल	23/04/2038	राहु	03/11/2040	शनि	02/04/2043
बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
02/04/2043		29/03/2044		28/01/2047		04/12/2047		05/05/2049	
29/03/2044		28/01/2047		04/12/2047		05/05/2049		02/05/2050	
केतु	23/04/2043	शुक्र	18/09/2044	सूर्य	13/02/2047	चंद्र	17/01/2048	मंगल	26/05/2049
शुक्र	22/06/2043	सूर्य	08/11/2044	चंद्र	10/03/2047	मंगल	16/02/2048	राहु	19/07/2049
सूर्य	11/07/2043	चंद्र	03/02/2045	मंगल	29/03/2047	राहु	03/05/2048	गुरु	06/09/2049
चंद्र	10/08/2043	मंगल	04/04/2045	राहु	14/05/2047	गुरु	11/07/2048	शनि	02/11/2049
मंगल	31/08/2043	राहु	06/09/2045	गुरु	24/06/2047	शनि	01/10/2048	बुध	23/12/2049
राहु	24/10/2043	गुरु	22/01/2046	शनि	13/08/2047	बुध	14/12/2048	केतु	13/01/2050
गुरु	11/12/2043	शनि	05/07/2046	बुध	26/09/2047	केतु	13/01/2049	शुक्र	15/03/2050
शनि	07/02/2044	बुध	29/11/2046	केतु	14/10/2047	शुक्र	09/04/2049	सूर्य	02/04/2050
बुध	29/03/2044	केतु	28/01/2047	शुक्र	04/12/2047	सूर्य	05/05/2049	चंद्र	02/05/2050

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
 [www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<u>बुध - राहु</u>		<u>बुध - गुरु</u>		<u>बुध - शनि</u>		<u>केतु - केतु</u>		<u>केतु - शुक्र</u>	
02/05/2050		19/11/2052		24/02/2055		04/11/2057		02/04/2058	
19/11/2052		24/02/2055		04/11/2057		02/04/2058		02/06/2059	
राहु	19/09/2050	गुरु	09/03/2053	शनि	30/07/2055	केतु	12/11/2057	शुक्र	12/06/2058
गुरु	21/01/2051	शनि	18/07/2053	बुध	16/12/2055	शुक्र	07/12/2057	सूर्य	03/07/2058
शनि	17/06/2051	बुध	12/11/2053	केतु	12/02/2056	सूर्य	15/12/2057	चंद्र	08/08/2058
बुध	27/10/2051	केतु	31/12/2053	शुक्र	25/07/2056	चंद्र	27/12/2057	मंगल	01/09/2058
केतु	21/12/2051	शुक्र	18/05/2054	सूर्य	12/09/2056	मंगल	05/01/2058	राहु	04/11/2058
शुक्र	24/05/2052	सूर्य	28/06/2054	चंद्र	03/12/2056	राहु	27/01/2058	गुरु	31/12/2058
सूर्य	10/07/2052	चंद्र	05/09/2054	मंगल	29/01/2057	गुरु	16/02/2058	शनि	09/03/2059
चंद्र	25/09/2052	मंगल	23/10/2054	राहु	25/06/2057	शनि	12/03/2058	बुध	08/05/2059
मंगल	19/11/2052	राहु	24/02/2055	गुरु	04/11/2057	बुध	02/04/2058	केतु	02/06/2059

<u>केतु - सूर्य</u>		<u>केतु - चंद्र</u>		<u>केतु - मंगल</u>		<u>केतु - राहु</u>		<u>केतु - गुरु</u>	
02/06/2059		08/10/2059		08/05/2060		04/10/2060		22/10/2061	
08/10/2059		08/05/2060		04/10/2060		22/10/2061		28/09/2062	
सूर्य	08/06/2059	चंद्र	25/10/2059	मंगल	16/05/2060	राहु	30/11/2060	गुरु	07/12/2061
चंद्र	19/06/2059	मंगल	07/11/2059	राहु	08/06/2060	गुरु	21/01/2061	शनि	30/01/2062
मंगल	26/06/2059	राहु	09/12/2059	गुरु	28/06/2060	शनि	22/03/2061	बुध	19/03/2062
राहु	15/07/2059	गुरु	06/01/2060	शनि	21/07/2060	बुध	16/05/2061	केतु	08/04/2062
गुरु	02/08/2059	शनि	09/02/2060	बुध	11/08/2060	केतु	07/06/2061	शुक्र	04/06/2062
शनि	22/08/2059	बुध	10/03/2060	केतु	20/08/2060	शुक्र	10/08/2061	सूर्य	21/06/2062
बुध	09/09/2059	केतु	23/03/2060	शुक्र	14/09/2060	सूर्य	29/08/2061	चंद्र	19/07/2062
केतु	16/09/2059	शुक्र	27/04/2060	सूर्य	21/09/2060	चंद्र	30/09/2061	मंगल	08/08/2062
शुक्र	08/10/2059	सूर्य	08/05/2060	चंद्र	04/10/2060	मंगल	22/10/2061	राहु	28/09/2062

<u>केतु - शनि</u>		<u>केतु - बुध</u>		<u>शुक्र - शुक्र</u>		<u>शुक्र - सूर्य</u>		<u>शुक्र - चंद्र</u>	
28/09/2062		07/11/2063		03/11/2064		05/03/2068		05/03/2069	
07/11/2063		03/11/2064		05/03/2068		05/03/2069		04/11/2070	
शनि	01/12/2062	बुध	28/12/2063	शुक्र	25/05/2065	सूर्य	23/03/2068	चंद्र	25/04/2069
बुध	28/01/2063	केतु	19/01/2064	सूर्य	25/07/2065	चंद्र	22/04/2068	मंगल	30/05/2069
केतु	20/02/2063	शुक्र	19/03/2064	चंद्र	04/11/2065	मंगल	14/05/2068	राहु	30/08/2069
शुक्र	29/04/2063	सूर्य	06/04/2064	मंगल	14/01/2066	राहु	08/07/2068	गुरु	19/11/2069
सूर्य	19/05/2063	चंद्र	06/05/2064	राहु	15/07/2066	गुरु	25/08/2068	शनि	23/02/2070
चंद्र	22/06/2063	मंगल	27/05/2064	गुरु	25/12/2066	शनि	22/10/2068	बुध	20/05/2070
मंगल	15/07/2063	राहु	21/07/2064	शनि	05/07/2067	बुध	13/12/2068	केतु	25/06/2070
राहु	14/09/2063	गुरु	07/09/2064	बुध	25/12/2067	केतु	03/01/2069	शुक्र	04/10/2070
गुरु	07/11/2063	शनि	03/11/2064	केतु	05/03/2068	शुक्र	05/03/2069	सूर्य	04/11/2070

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[\[www.devpoojanam.com\]](http://www.devpoojanam.com) [devpoojanam@gmail.com]

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

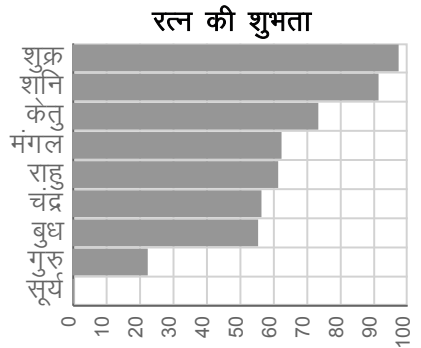
Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	97%	धनार्जन, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	91%	सुख, स्वास्थ्य, धन
लहसुनिया	केतु	73%	स्वास्थ्य, सुख
मूंगा	मंगल	62%	धन, सुख, धनार्जन
गोमेद	राहु	61%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	56%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
पन्ना	बुध	55%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	22%	ग्रह कलेश, व्यय, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	04/11/2005	0%	38%	50%	55%	22%	100%	97%	73%	61%
गुरु	04/11/2021	0%	62%	69%	34%	47%	84%	91%	61%	73%
शनि	03/11/2040	0%	38%	50%	61%	22%	100%	100%	67%	61%
बुध	04/11/2057	0%	38%	62%	67%	22%	100%	91%	61%	73%
केतु	03/11/2064	0%	38%	69%	55%	22%	100%	78%	47%	86%
शुक्र	03/11/2084	0%	38%	62%	61%	22%	100%	97%	67%	80%
सूर्य	04/11/2090	0%	62%	69%	55%	34%	84%	78%	47%	61%
चंद्र	04/11/2100	0%	69%	62%	61%	22%	97%	91%	47%	61%
मंगल	05/11/2107	0%	62%	75%	34%	34%	97%	91%	47%	80%

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[\[www.devpoojanam.com\]](http://www.devpoojanam.com) [devpoojanam@gmail.com]

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	अल्प बचत
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
 [www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा अंगुली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

**Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898**

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्य एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

Amit

पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं—

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है ।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं ।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन—पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता—पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार—बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटा, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

**ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

**Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898**

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

Amit

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है –

एक मुखी – सूर्य ग्रह – स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म – विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी – चंद्र ग्रह– वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी – मंगल ग्रह– शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी – बुध ग्रह– शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि – विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी – गुरु ग्रह– शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी – शुक्र ग्रह – प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी – शनि ग्रह– शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी – राहु ग्रह– राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी – केतू ग्रह– केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी – भगवान महावीर– कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी – इंद्र ग्रह– आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी – भगवान विष्णु ग्रह– विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी – इंद्र ग्रह– सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी – शनि ग्रह– आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यों में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही आप हंसमुख हैं। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता है। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)

+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003

[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

Amit

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रूचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते हैं। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते हैं। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते हैं। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता है। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। कुंडली के षष्ठ भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता है। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

बुध आपके षष्ठेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उत्तम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)

+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003

[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

Amit

चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया मकर लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सदभावना का भाव विद्यमान रहता है। यद्यपि इनके चेहरे पर चैतन्यता एवं विचारशीलता के भाव की न्यूनता रहती है परन्तु गंभीरता का भाव बना रहता है। ये कार्यशील तथा परिश्रमी व्यक्ति होते हैं तथा अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता प्रबल रहती है अतः जीवन में इसी से उन्नति तथा सफलता प्राप्त करते हैं।

सेवापरायणता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है तथा समाज एवं देश सेवा के कार्यों में ये तत्पर रहते हैं। ये साहसी एवं संघर्षशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा मन में उदासीनता के भाव की प्रबलता के कारण सुख दुख को समान मात्रा में स्वीकार करते हैं। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण अल्प रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये विज्ञान अनुसंधान या शास्त्रीय विषयों का ज्ञान अर्जित करके एक विद्वान के रूप में भी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं।

इसके प्रभाव से आप स्वस्थ तथा बलवान होंगे तथा आदर्श वादिता का भाव भी रहेगा एवं स्वतंत्रता पूर्वक अपने आदर्शों का पालन करेंगे। आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी उदारता एवं विनम्रता का व्यवहार करेंगे फलतः ये भी आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही अपने सदगुणों से आप सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करेंगे।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक परिश्रमी पुरुष होंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। कार्य क्षेत्र में भी आपके उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। स्वभाव से आप तेजस्वी भी होंगे तथा तेजस्विता के साथ उग्रता का प्रदर्शन भी करेंगे फलतः इससे आपको सामाजिक तथा कार्यक्षेत्र में अनावश्यक परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। अतः यत्नपूर्वक ऐसी प्रवृत्तियों का आपको परित्याग करना चाहिए।

आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे एवं आयस्रोतों की वृद्धि भी समय समय पर होती रहेगी। भौतिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगे तथा सपरिवार उनका उपभोग करेंगे परन्तु आप घर से दूर किसी अन्य स्थान पर निवास करके उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगे।

मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको वांछित

Amit

सहयोग एवं लाभ समय समय पर होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार पराक्रमी परिश्रमी एवं तेजस्वी पुरुष होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)

+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृत्ति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पसंद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यों को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा शनि भी चतुर्थ भाव में स्थित है। यद्यपि शनि नीचराशि में है लेकिन लग्नेश होकर सामान्यतया शुभफल ही प्राप्त होंगे। अतः सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति है। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

चतुर्थभाव में नीचस्थ शनि की मंगल की राशि में स्थिति के फल स्वरूप जीवन में मध्यावस्था के बाद आपको रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

Amit

अतः यदि प्रारंभ से ही खान-पान का ध्यान रखा जाय तथा तनाव से दूर रहें तो ऐसी समस्याओं में कमी आएगी तथा प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)
+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003
[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी। जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि के द्वारा शीघ्र कर देंगे। अतः अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपका प्रबल आकर्षण एवं रूचि रखेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों के ज्ञानार्जन में प्रयत्न शील होंगे तथा किसी नवीन सिद्धांत का भी प्रतिपादन कर सकते हैं जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में वृष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों से आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम के क्षेत्र में भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि—कोण से युक्त होगा। अतः इसकी परिणीति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता-पिता के प्रति उनके मन सामान्यतया आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वतन्त्र प्रवृत्ति के होने के कारण यदा-कदा वे किसी महत्वपूर्ण कार्य को बिना माता-पिता की सलाह या सहयोग से भी सम्पन्न कर सकते हैं लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए तथा उनकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए। इससे आपकी सम्बन्धों में विश्वास, सदभाव एवं मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त वे वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इस प्रकार संतति पक्ष से सामान्यतया सुख एवं सहयोग ही अर्जित करेंगे तथा उनसे सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं परिश्रमी होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति प्राप्त करके अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इसके अतिरिक्त आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल भी होगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य समाजिक जनों को भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होगी फलतः सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। अतः बच्चों की उन्नति से आप सन्तुष्ट होंगे।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)

+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003

[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है लेकिन राहु के प्रभाव से उसमें उग्रता साहस पराक्रम के साथ साथ स्वार्थी एवं कर्तव्य परायणता के भाव में कमी होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी यद्यपि सुशील स्वभाव की महिला होंगी परन्तु यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा अपने साहसिक कार्यों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। वह स्वभाविमानी प्रवृत्ति की महिला होंगी एवं सहिष्णुता की उनमें न्यूनता रहेगी। साथ ही स्वार्थ के वशीभूत होकर वह अपने कर्तव्यों की भी उपेक्षा करेंगी।

आपकी पत्नी किंचित श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के अंग भी सुडौल एवं पुष्टता से युक्त रहेंगे लेकिन शरीर में पतलापन रहेगा। वह आधुनिक विचारों की महिला होगी एवं पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति के प्रति आकर्षित रहेंगी इसके अतिरिक्त कला एवं संगीत में भी रुचिशील होंगी।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा राहु के प्रभाव से आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकते हैं विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं आकर्षण रहेगा लेकिन पत्नी के स्वाभिमानी तथा तेजस्वी प्रवृत्ति से यदा कदा आपको परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थिति में संयम एवं बुद्धिमता से कार्य लेना चाहिए।

आपका विवाह मध्यम परिवार में होगा तथा आर्थिक दृष्टि से वे सम्पन्न रहेंगे। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। वे भी आपको विशेष स्नेह कम ही देंगे अतः अवसरानुकूल ही आप लोगों की मुलाकाते हो पाएंगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी के मन में सेवा भाव होगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा नहीं करेंगी। देवर एवं नद भी इनके उग्र व्यवहार तथा वाणी से अप्रसन्न होंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की जीवन में उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही चन्द्रमा भी दशमभाव में ही स्थित है। तुला राशि वायुतत्व एवं चन्द्रमा जलतत्व युक्त ग्रह है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी। साथ ही आप समय समय पर इसमें परिवर्तनों के भी इच्छुक होंगे जिससे आपको तात्कालिक लाभ अवश्य मिलेगा। इसके अतिरिक्त स्वतंत्र कार्य में भी आपकी महत्वाकांक्षा रहेगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थ यथा मोती, शंख, प्रवाल, मछली, सुंदर एवं मूल्यवान वस्त्र, रेशमी वस्त्र, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री, इलैक्ट्रॉनिक्स उपकरण, एयर ट्रेवल एजेंसी, कला एवं संगीत केन्द्र का स्वामित्व या व्यवस्थापक, मिट्टी के खिलौने, ईट वालू रेत आदि का कार्य, द्रव्य पदार्थो यथा दूध घी दही का व्यापार तथा आलंकारिक वस्तुओं का आयात निर्यात से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा इसमें उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों या पदार्थों का ही व्यापार करना चाहिए।

दशमभाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी अधिकार प्राप्त पद एवं सम्मान को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि रहेगी। साथ ही आप किसी सम्मानित संस्कृति कला संस्था या क्लब आदि में भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य हो सकते हैं। इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा अपनी उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता सुशिक्षित बुद्धिमान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। समाज में लोगों के प्रति उनकी सेवा भावना होगी जिससे वे आदरणीय रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव विद्यमान होगा तथा उच्चशिक्षा के प्रति विशेष चिन्तित होंगे एवं इसका यथोचित प्रबंध करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका पूर्ण योगदान रहेगा। साथ ही आप भी अपने परिश्रम एवं लगन से नित्य उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के मान सम्मान में भी वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं सैद्धान्तिक तथा वैचारिक अनुकूलता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्त्व के कार्यों को एक दूसरे के सहयोग से सम्पन्न करेंगे जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Pt. Dr. Gyanendra Sharma (L.Expert-1025)

+91-730-226-8898

Dev Astro, Dev Poojanam, Bareilly, U.P., 243003

[www.devpoojanam.com] [devpoojanam@gmail.com]